समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

● प्रकाशन दिनांक : १५ जनवरी २०१४ ● वर्ष : १७ ● अंक : ०७ (निरंतर अंक : १९९)

मासिक समाचार पत्र

विराट धर्म रक्षा संत-सम्मेलन

विभिन्न संतों, संगठनों के प्रमुखों, प्रतिष्ठितों एवं हजारों धर्मप्रेमी लोगों ने संस्कृति एवं संतों पर हो रहे अन्याय का विरोध करते हुए निर्दोष पूज्य बापूजी एवं श्री नारायण साँईं की रिहाई की माँग की ।

१४ फरवरी : मातृ-पितृ पूजन दिवस

माता-पिता और गुरुजनों का आदर करनेवाला चिरआदरणीय हो जाता है ।

- पूज्य बापूजी

मातृ-पितृ पूजन दिवस पर
पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का सर्वहितकारी संदेश

जागृत देव हैं माता-पिता

१४ फरवरी 'वेलेंटाइन डे' के नाम पर लाखों-लाखों बच्चे-बच्चियों की जिंदगी तबाह हो रही है। नशीली चीजों का सेवन, घर से भाग जाना, दारू पीना, 'आई लव यू' करके एक-दूसरे को स्पर्श करके यादशक्ति बरबाद करना - ये सब माँ-बाप के लिए और संतानों के लिए मुसीबत पैदा कर रहा है। गणेशजी ने जैसे माता पार्वती और शिवजी का पूजन किया ऐसे ही तुम लोग १४ फरवरी को माता-पिता का पूजन करना। माता-पिता को सदा साथ रखना। कलियुग में तप, उपवास, व्रत, धारणा, ध्यान, समाधि तो कठिन है लेकिन चलते-फिरते जागते देव **'सर्वतीर्थमयी माता, सर्वदेवमयः पिता'** इनका आदर-सत्कार करना। बुढ़ापे में उनसे तुच्छ व्यवहार न करना, उनको वृद्धाश्रम में, अनाथाश्रम में, सरकारी आश्रम में - इन जगहों में मत छोड़ना।

और सब मिलेगा लेकिन माता-पिता नहीं मिलेंगे और माता-पिता तो जागृत देवता हैं। कितने दुःख सहकर माता ने हमें जन्म दिया, पाला-पोसा, बड़ा किया। पिता ने कितनी कठिनाइयों से हमारा भरण-पोषण किया। माता-पिता को साथ रखना, उनका आशीर्वाद लेना, मंगलमय जीवन निभाना, आपका मंगल होगा बेटे-बेटियाँ! और फिर आपके बच्चे भी ऐसे आपका आदर करेंगे। मैंने मेरे माता-पिता का आदर किया तो मेरे बेटा-बेटी मेरा आदर करते हैं, तुम भी करते हो। तो जो माता-पिता और गुरुओं का आदर करते हैं वे आदरणीय हो जाते हैं। भगवान तुम्हें ऐसी सद्बुद्धि दें। ॐ... ॐ... ॐ...

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १७ अंक :०७
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक :१९९)
१५ जनवरी २०१४ मूल्य :३.५०/-

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क :

भारत में :
(१) वार्षिक : ३०/-
(२) द्विवार्षिक : ५०/-
(३) पंचवार्षिक : ११०/-
(४) आजीवन : ३००/-

विदेशों में :
(१) पंचवार्षिक : US $ 50
(२) आजीवन : US $ 125

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय,
संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन :(०७९) ३९८७७७३९/८८,
२७५०५०१०/११.

e-mail :1) lokkalyansetu@ashram.org 2) ashramindia@@ashram.org
Website : 1) www.lokkalyansetu.org 2) www.ashram.org

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board.Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना सदस्य क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

◆ टी.वी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ◆

A2Z NEWS — रोज सुबह ७-३० बजे, रात्रि १० बजे

care WORLD — रोज सुबह ७-०० बजे

मंगलमय — www.ashram.org पर उपलब्ध

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

१) जागृत देव हैं माता-पिता २
२) कैसे पायें बच्चे अंतरात्मा की प्रसन्नता ? ४
३) बस, वहीं सारी शंका, कुशंका, प्रश्न समाप्त हो जाने चाहिए ५
४) संत आशारामजी बापू यदि मेरे देश में होते तो अवश्य ही नोबल प्राइज विनर होते – सुनंदा पी. तँवर ५
५) व्यवहार-कुशलता के आदर्श : श्रीरामजी ६
६) मीडिया का जहर, भक्तों पर बेअसर – श्री दिलीप लालवानी ७
८) 'नेशनल काउंसिल ऑफ हिन्दू टेम्पल्स ऑफ यूनाइटेड किंगडम' ने हिन्दू संतों को फँसाये जाने का कड़ा विरोध किया ८
९) आप क्या चाहते हैं ? ९
१०) श्रीविष्णुसहस्रनाम रसधार ११
११) 'संस्कृति रक्षा सभा' ने किया षड्यंत्र का विरोध १२
१२) संसाररूपी हाथी को विदीर्ण करनेवाले सिंह एवं भवरोग निवारक धन्वंतरि १३
१३) सेक्स एजुकेशन से होता है बच्चों का दिमाग खराब १४
१४) आप आँख खोलिये, सोचिये और समझिये १५
१५) बिकाऊ मीडिया की असलियत १७
१६) प्रीति का पथ –स्वामी श्री अखंडानंदजी सरस्वती १८
१७) टीवी चैनलों पर नियंत्रण के लिए सरकार बनाये दिशानिर्देश १९
१८) मेवों द्वारा बल व स्वास्थ्य प्राप्ति २१
१९) लौकी द्वारा स्वास्थ्य-सुरक्षा २२
२०) अलख पुरुष की आरसी २३

ॐ आनंद... ॐ आनंद... शुभ समाचार...

अब प्रारम्भ हो रही है 'लोक कल्याण सेतु' की ऑनलाइन सदस्यता

वार्षिक : ₹ 30 द्विवार्षिक : ₹ 50 पंचवार्षिक : ₹ 110 आजीवन : ₹ 300

अब इंटरनेट के द्वारा आप कहीं भी 'लोक कल्याण सेतु' की मुद्रित प्रति के ऑनलाइन सदस्य बन सकते हैं।
www.lokkalyansetu.org, www.ashram.org पर लॉग-इन करें।
क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, एटीएम कार्ड तथा नेट बैंकिंग द्वारा ऑनलाइन सदस्यता-राशि जमा करने की सुविधा
सम्पर्क : 'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद-5 फोन : (079) 39877739, 27505010-11
e-mail: lokkalyansetu@ashram.org, ashramindia@ashram.org

मातृ-पितृ पूजन दिवस : १४ फरवरी

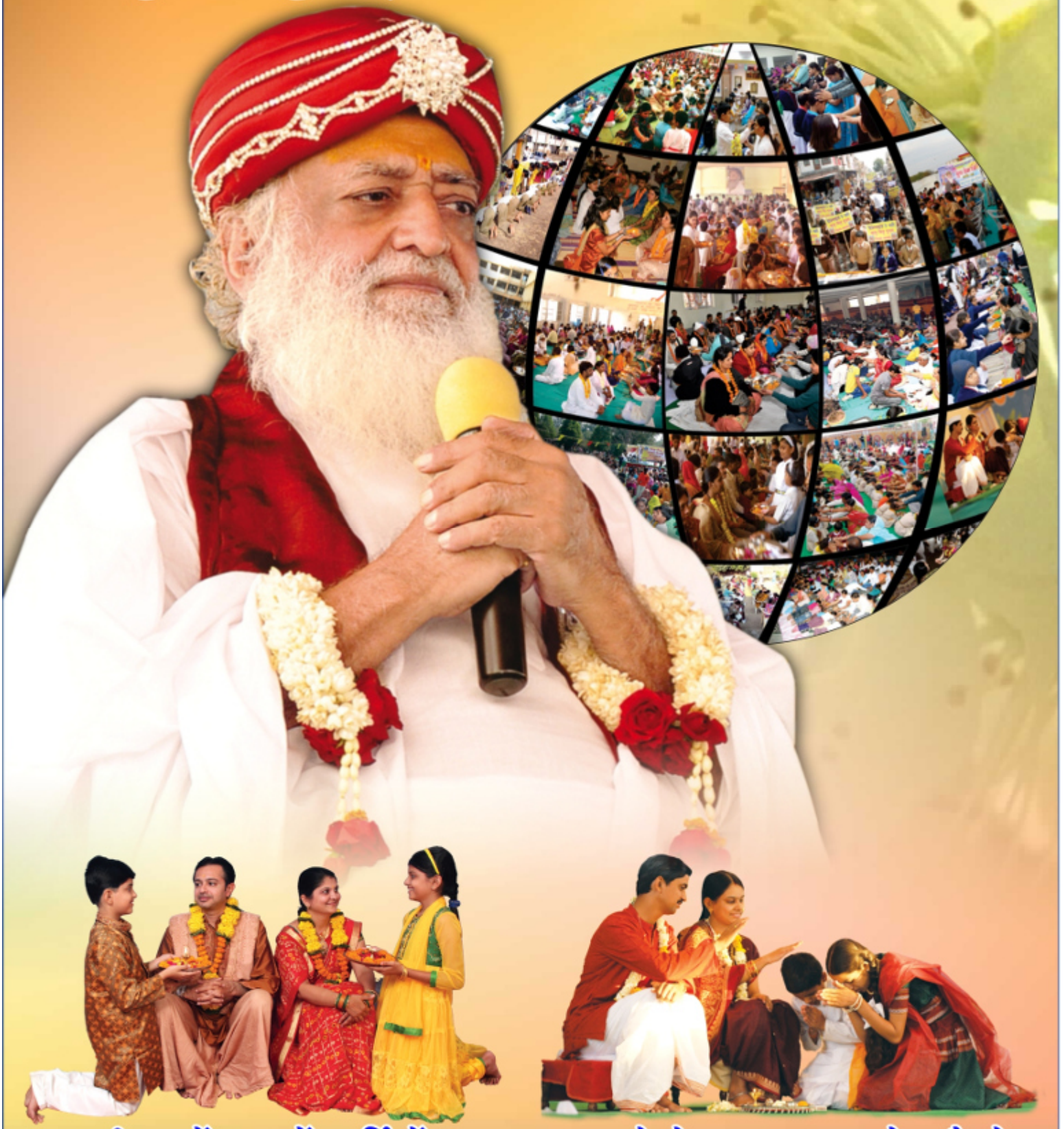

पीपल में, बड़ में, मूर्ति में भगवद्भाव करने से भगवद्-फल होता है तो चलते-फिरते-बोलते और सदा बच्चों के लिए स्नेह बरसानेवाले माँ-बाप के प्रति भगवद्भाव करें, उस भाव से आशीर्वाद प्राप्त करें तो वह आशीर्वाद बच्चों का कितना-कितना मंगल कर डालेगा !

- पूज्य बापूजी

कैसे पायें बच्चे अंतरात्मा की प्रसन्नता ?

नासिक में एक ८५ साल के वृद्ध काका आये । उनकी बेटी ने अपने बाप का पूजन किया तो उनके चित्त में कितनी प्रसन्नता हुई होगी कि मेरे बच्चों को ये संस्कार मिले हैं । जब पत्थर में हमारी भावना के बल से भगवद्-फल मिल जाता है । पीपल में, बड़ में, कब्र में, मूर्ति में भगवद्भाव करने से भगवद्-फल होता है तो चलते-फिरते-बोलते और सदा बच्चों के लिए स्नेह बरसानेवाले माँ-बाप के प्रति भगवद्भाव करें, उस भाव से आशीर्वाद प्राप्त करें तो वह आशीर्वाद बच्चों का कितना-कितना मंगल कर डालेगा !

किसीने मुझसे कहा कि 'आजकल के बच्चे नहीं मानेंगे । केवल माँ-बाप को हँसाओ, हँसाने का दिन रखो ।' अरे ! चुटकुले में हँसाना हुआ, यह तो मजाक हो जायेगा न !

पूजन में सद्भाव होता है, भगवद्भाव होता है। जैसा भाव करोगे, वैसा फल होगा। **'मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।'** हमारे शास्त्रों ने माँ-बाप को हँसाने की बात नहीं कही, पूजन, आदर व सेवा की बात कही है । हँसाना तो आजकल क्या-क्या उच्छृंखलताएँ भी कर देती हैं लेकिन आदर से अंतरात्मा की प्रसन्नता लाओ।

मुसलमान भाई कब्र पर यकीन करते हैं, हिन्दू भाई मूर्ति-मंदिर में यकीन करते हैं, ईसाई भाई अपनी-अपनी जगह पर यकीन करते हैं तो उन मूर्तियों से, कब्रों से, चिह्नों से आपकी भावना आपको फल देती है । जिनके रूप में परमात्मा सचेतन रूप में हमारे सामने चल-बोल रहा है और जो वात्सल्य से आपका पालन-पोषण करके आनंदित हुए, पद-पद पर आपका ध्यान रखते थे, उनका पूजन अगर आपने पूज्यबुद्धि से किया तो माता-पिता का हृदय तो वैसे ही पुत्र-पुत्री को देख के स्नेह छलकाता है और आपने भगवद्बुद्धि से पूजन किया तो फिर आपके पूजन का फल जितने रुपये की सामग्री है, उतना ही नहीं होगा, भगवान की तरफ से फल होगा। भगवान का वचन है गीता में -

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥

'मेरा भक्त मुझको सब यज्ञ और तपों का भोगनेवाला, सम्पूर्ण लोकों के ईश्वरों का भी ईश्वर तथा सम्पूर्ण भूत-प्राणियों का सुहृद अर्थात् स्वार्थरहित दयालु और प्रेमी, ऐसा तत्त्व से जानकर शांति को प्राप्त होता है।' **(गीता : ५.२९)**

भगवान कहते हैं - मैं यज्ञ का फल भोगनेवाला हूँ...

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदं इन्द्राय इदं न मम ।
ॐ वरुणाय स्वाहा, इदं वरुणाय इदं न मम ।

वरुण के रूप में, इन्द्र के रूप में, कुबेर के रूप में और अन्य देवों के रूप में, सबकी गहराई में तो मैं ही हूँ। है न ! तो यज्ञ का, तप का, सेवा का फल - सुख किसको होता है ? बाँस या पाइप को कितना भी पट्टा-दुपट्टा पहनाओ, उसको सुख नहीं होगा। सुख चैतन्य में होता है। जिस किसीकी तुम सेवा करते हो - गरीब-गुरबे की, अनाथ की, माँ-बाप की... 'तो क्या करें बेचारी माँ है', ऐसा नहीं। 'बेचारा बाप है, बेचारा गरीब है' तो आपको बेचारा जैसा फल मिलेगा। नहीं-नहीं, ये तो भगवान माँ के रूप में हैं, भगवान गरीब के रूप में आये हैं, भगवान अतिथि के रूप में आये हैं । आहा... हे भारतीय संस्कृति तुझे प्रणाम है । स्थूल वस्तुओं का भगवदीकरण करके आध्यात्मिक फायदा उठाने का विज्ञान जितना भारतीय संस्कृति में है, उतना दुनिया में कहीं हमने देखा-सुना नहीं।

बस, वहीं सारी शंका, कुशंका, प्रश्न समाप्त हो जाने चाहिए

– श्री हरि भक्त परायण नवनाथ आँधले महाराज, अखिल भारतीय वारकरी संत

परम पूज्य संत आशारामजी बापू को जेल में रहना पड़ रहा है, इससे मन को अत्यंत वेदना हो रही है। संतों पर लग रहे आरोपों के पीछे मिशनरियों का हाथ है। धर्म, संस्कृति टिकाये रखने के लिए बापूजी जैसे महान संत दिन-रात प्रयत्नशील रहे हैं। संस्कृति, संस्कार इनका मूल संत हैं। इसीलिए संतों के प्रभाव को समाप्त करने के लिए अनेक प्रकार के अवलम्बन लिये जा रहे हैं, यह षड्यंत्र उसका ही एक प्रकार है। हिन्दू धर्म और संतों पर आघात हो रहा है इसीलिए सारे साधकों और जनता को मेरा विनम्र आह्वान है कि ऐसे प्रसंगों में तुकाराम महाराजजी के अभंग को ध्यान में रखना चाहिए :

सांगचिये पायी हा माझा विश्वास ।
सर्व भावे दास झालो त्यांचा ॥

पूज्य बापूजी कहते हैं : 'मैं निर्दोष हूँ।' बस, वहीं सारी शंका, कुशंका, प्रश्न समाप्त हो जाने चाहिए। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, समाचार पत्रों ने कितना ही कुप्रचार किया फिर भी आप सुप्रचार करके अपना पक्ष रखने में कहीं कमी मत रखना। ज्ञानेश्वर महाराज को भिक्षा नहीं दी, झोली में गोबर, मिट्टी डाली। तुकाराम महाराज को गाँव में भजन करने के लिए नहीं रहने दिया गया। ऐसे ही बापूजी को भी जेल भेज दिया गया, जिससे उनके द्वारा हो रहे धार्मिक कार्य रुक जायें। यह बात हिन्दुस्तान के लिए अत्यंत अशोभनीय है।

मुझे बापूजी के बारे में कुछ कहने के लिए कहा तो वे शब्द दस वाक्यों में, दस दिनों में, दस महीनों में व्यक्त करने जैसा नहीं है क्योंकि तुकाराम महाराज कहते हैं :

संत नव्हती जगा माणसाच्या सारिखे ।
समुद्र नदी नव्हे पै गा । पाषाण म्हणू नये लिंगा ॥

संसार में संत साधारण मनुष्य की तरह नहीं होते। समुद्र नदी आदि सभी जलस्रोतों से व्यापक एवं अथाह होता है। इसी प्रकार शिवलिंग को पत्थर नहीं बोलना चाहिए।

गुरू चरणी ठेविता भाव । आपो आप भेटे देव ॥

गुरुचरणों में श्रद्धा-भाव रखने से भगवान अपने-आप मिलते हैं।

संत आशारामजी बापू यदि मेरे देश में होते तो अवश्य ही नोबल प्राइज विनर होते

– सुनंदा पी. तँवर, १०४, रैगलॉन कोर्ट, एम्पायर वे, लंदन (यूके)

पिछले लगभग साढ़े ४ महीने से विश्व के महान हिन्दू संत पूज्य आशारामजी बापू पर झूठे आरोप मढ़-मढ़कर जिस प्रकार उन्हें प्रताड़ित किया जा रहा है, दुष्प्रचार किया जा रहा है, यह पूरे विश्व के हिन्दुओं का घोर अपमान है। पिछले ५० वर्षों में बापूजी ने मानवता के हित के लिए जितने कार्य किये हैं, वे अतुलनीय हैं। मैं भारतीय मूल की एक ब्रिटिश महिला हूँ। बापूजी जैसे संत पर इतने भयंकर अत्याचार होने पर भी भारतीय समाज का मुर्दे की तरह खामोश रहकर अत्याचारियों का उत्साहवर्धन करना - ऐसा विश्व में मैंने कहीं नहीं देखा।

आज मैं सभी भारतवासियों से कहना चाहती हूँ कि यदि बापूजी ने इंग्लैंड में जन्म लिया होता तो हम उन्हें अब तक 'नोबल पुरस्कार' सहित विश्व के सभी बड़े पुरस्कारों से नवाज चुके होते।

व्यवहार-कुशलता के आदर्श : श्रीरामजी

सीता-स्वयंवर में गुरु विश्वामित्रजी की आज्ञा पाकर श्रीरामजी ने शिवजी का धनुष तोड़ा। उसी समय परशुरामजी वहाँ आ पहुँचे। वे शिवजी के टूटे हुए धनुष को देख क्रोध से तिलमिला उठे और गरजकर बोले : ''जिसने भी शिवजी के धनुष को तोड़ा है, वह सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है। वह इस समाज को छोड़कर अलग हो जाय नहीं तो यहाँ उपस्थित सारे राजा मारे जायेंगे।''

यह सुन लक्ष्मणजी अधीर हो उठे और परशुरामजी को अपमानयुक्त वचन बोलने लगे। लक्ष्मणजी और परशुरामजी में वाद-विवाद बढ़ने लगा। वातावरण बिगड़ता देख श्रीरामजी ने नेत्रों के इशारे से लक्ष्मणजी को रोक दिया और परशुरामजी की क्रोधाग्नि को शांत करने के लिए हाथ जोड़कर जल के समान शीतल वचन बोले : ''हे मुनीश्वर ! इसे छोटा बच्चा और अपना सेवक जानकर इस पर कृपा कीजिये। बालक यदि कुछ चपलता भी करता है तो गुरु, पिता और माता उसे देखकर आनंदित होते हैं। आप तो समदर्शी, सुशील, धीर और ज्ञानी मुनि हैं। आपका अपराधी तो मैं हूँ। कृपा, क्रोध, वध, बंधन जो कुछ करना हो दास समझकर मुझ पर कीजिये।''

''तेरा यह भाई तेरी ही सम्मति से कटु वचन बोलता है और तू छल से हाथ जोड़कर विनय करता है ! या तो तू युद्ध कर, नहीं तो राम कहलाना छोड़ दे।''इस प्रकार अपमानयुक्त वचन कहकर परशुरामजी ने कुठार (फरसा) उठा लिया।

तब धैर्य के मूर्तिमंतस्वरूप श्रीरामजी बड़ी विनम्रता से सिर झुकाकर बोले : ''हे मुनीश्वर ! आपके हाथ में कुठार है और मेरा सिर आगे है। जिस प्रकार आपका क्रोध शांत हो, वही कीजिये। स्वामी और सेवक में युद्ध कैसा ! हमारी और आपकी बराबरी कैसी ! कहाँ मेरा राममात्र छोटा-सा नाम और कहाँ आपका 'परशु'सहित बड़ा नाम (परशुराम) !''

इतना विनम्र होने पर भी जब परशुरामजी का क्रोध शांत नहीं हुआ बल्कि इसके विपरीत वे रामजी को और भी अपमानित और लांछित करने लगे तब श्रीरामजी ने कहा : ''हे भृगुनाथ ! यह सत्य सुनिये, संसार में ऐसा कौन योद्धा है, जिसे हम डर के मारे मस्तक नवायें ! यदि रण में हमें कोई भी ललकारे तो हम उससे सुखपूर्वक लड़ेंगे। क्षत्रिय का शरीर धरकर जो युद्ध से डर गया, उस नीच ने अपने कुल पर कलंक लगा दिया। रघुवंशी रण में काल से भी नहीं डरते। पर ब्राह्मणदेव ! आपकी ऐसी प्रभुता है कि जो आपसे डरता है वह सबसे निर्भय हो जाता है।''

श्रीरामचन्द्रजी के ऐसे कोमल और रहस्यपूर्ण वचन सुनकर परशुरामजी का क्रोध तो शांत हो गया लेकिन अपने मन का संदेह दूर करने के लिए उन्होंने श्रीरामजी को भगवान विष्णु का धनुष देकर उसे खींचने के लिए कहना चाहा। ज्यों परशुरामजी धनुष देने लगे, धनुष अपने-आप ही चला गया। यह देख वे आश्चर्यचकित हो गये। तब उन्हें श्रीरामजी के बल, प्रभाव व महिमा का पता चला। उन्होंने श्रीरामजी से क्षमायाचना की और उनकी अनुपम स्तुति करके तप के लिए वन को चले गये।

कैसी अद्भुत है श्रीरामजी की व्यवहार-कुशलता ! गुरुजी के प्रति ऐसा आज्ञापालन कि स्वयंवर में गुरु विश्वामित्रजी की आज्ञा मिलने पर ही उन्होंने धनुष तोड़ा। छोटों के प्रति स्नेह व अनुशासन भरा व्यवहार भी इतना विलक्षण कि लक्ष्मणजी द्वारा अनुचित व्यवहार करने पर उन्हें भरी सभा में अपमानित न करते हुए केवल नेत्रों के संकेत से चुप करा दिया। नम्रता, समता, धैर्य व सर्वहितकारिता की साक्षात् मूर्ति भी ऐसे कि जब परशुरामजी खूब अधिक कोपायमान हुए, कुठार द्वारा उनका वध करने को आतुर हो गये, तब भी श्रीरामजी ने मधुर वचन बोलना व मधुर व्यवहार करना नहीं छोड़ा। न घबराये, न गिड़गिड़ाये अपितु उनका क्रोध व तपन किस प्रकार शांत हो और उन्हें सुख प्राप्त हो, इसी उद्देश्य से उन्हें मना लिया। शौर्य भी इतना कि जब श्रीरामजी ने देखा कि क्षमायाचना से काम नहीं बन रहा है तो महायोद्धा परशुरामजी की युद्ध की चुनौती स्वीकार करके उन्होंने अपने रघुकुल की वीरता का परिचय भी दिया।

श्रीरामजी के ये सद्गुण सभीके लिए व्यवहार-कुशलता का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

मीडिया का जहर, भक्तों पर बेअसर

– श्री दिलीप लालवानी, सम्पादक, 'दैनिक धनुषधारी'

आज अनेक ऐसी खबरें हैं जिनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है लेकिन संत आशारामजी बापू के लिए लगातार जहर उगला जा रहा है। जैसे ही बापूजी की जमानत की सुनवाई का दिन आता है तो उसके एक दिन पहले धड़ाधड़-धड़ाधड़ फिर सब न्यूज चैनल चालू हो जाते हैं।

परम पूज्य बापूजी के यहाँ जब नये जोड़े विवाह करके आशीर्वाद लेने के लिए जाते हैं तो बापूजी उन्हें भी संयम की बात कहते हैं। बापूजी अपने सत्संग में भी सीख देते हैं कि 'आप अपने जीवन में संयम रखो।' बापूजी ने हमेशा यह कहा है कि 'जितना आप अपने रज-वीर्य को बचाओगे उतना आप ओजस्वी बनोगे।' पूज्य बापूजी ने देश के असंख्य युवाओं के तेज-ओज एवं बल की सुरक्षा की है। जरा तो सोचो, जिनकी वाणी के प्रताप से, जिनके सत्संग-शिक्षाओं के प्रभाव से इतने लोगों के जीवन में संयम के फूल खिलने लगते हैं, वे खुद कैसे ऐसे हो सकते हैं! बापूजी ने कहा भी है : **'मेरी सच्चाई मेरे साथ है।'**

जो हमारे अंदर अच्छे संस्कार आये हैं ये बापूजी की ही देन हैं। मैं पहले नास्तिक और बहुत बड़ा व्यसनी था लेकिन बापूजी से जुड़ने के बाद मेरे जीवन में अतुलनीय परिवर्तन आया (विस्तृत अनुभव हेतु पढ़ें 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका, मई २०१३, अंक २४५)। मैंने अपने पिता और माता को भगवान की तरह मानना शुरू किया। मुझे कई बार बापूजी के साधकों के साथ जेलों में जाकर कैदियों तक सत्संग पहुँचाने का भी सौभाग्य मिला। तब मैंने देखा कि बापू के सत्संग से, सत्साहित्य से कैदियों के जीवन में कितना परिवर्तन आया है!

एक तरफ पूरे देश के अंदर पूज्य बापूजी को बदनाम करने के लिए मीडिया इतनी बड़ी-बड़ी बातें कह रहा है पर दूसरी तरफ देखो, बापूजी के आश्रमों में अभी भी लोगों की भीड़ कम नहीं हुई है। आज भी जो साधक बापूजी के लिए रो रहे हैं, बिलख रहे हैं, उन लोगों को गुंडा बताया जा रहा है। इनको वे लोग क्यों नहीं दिख रहे हैं जो कसाब के लिए प्रदर्शन कर रहे हैं?

हमारे बापूजी अवतारी पुरुष हैं। वे बिल्कुल बादलों को चीरते हुए वापस चमकते हुए प्रकट होंगे।

'नेशनल काउंसिल ऑफ हिन्दू टेम्पल्स ऑफ यूनाइटेड किंगडम' ने हिन्दू संतों को फँसाये जाने का कड़ा विरोध किया

('नेशनल काउंसिल ऑफ हिन्दू टेम्पल्स ऑफ यूनाइटेड किंगडम' द्वारा 'धर्म रक्षा मंच' को लिखे गये पत्र में कहा गया है कि)

हमें यह जानकर बहुत दुःख होता है कि भारत में सनातन धर्म का अपमान हो रहा है और खासकर संतों को सताया जा रहा है। वहीं दूसरी ओर यूके में एनआरआई सनातन धर्म की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं, जिसे रोकने का ब्रिटिश क्रिश्चियन सुप्रिमेसिस्ट्स (यूके में क्रिश्चियन धर्म की श्रेष्ठता का दावा करनेवाले) पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं लेकिन असफल हुए हैं।

हमारे साथ हुई भेंटवार्ता में यहाँ के प्रधानमंत्री मि. डेविड कैमरॉन ने कहा कि ''ब्रिटिश हिन्दू समुदाय का अनोखा योगदान आखिरकार पहचाना गया है।''

हम जब अपने संतों को पीड़ित होते हुए देखते हैं तो हमें बहुत दुःख होता है। पश्चिमी लोगों को भी पता है कि मिशनरी चर्च सारे विश्व में मुसीबतें बढ़ा रहे हैं। क्रिश्चियन मिशनरियों की सिद्धांतवादी धार्मिक कुटिल विसंगतियों से उनका मोह भंग हो चुका है।

सन् २००१ से २०१० तक वेटिकन (कैथोलिक चर्च की सेंट्रल बॉडी) ने पिछले ५० सालों में ३००० पादरियों पर लगे यौन-उत्पीड़न के आरोपों के मामलों को निपटाने का प्रयास किया है। 'वेटिकन प्रमोटर ऑफ जस्टिस' के अनुसार यह तो बस एक छोटी-सी घटना है।

बहुत-से लोगों का यहाँ प्रश्न है कि ऐसे पादरियों को जेल में क्यों नहीं भेजा जाता है? अमेरिका के 'एसोसिएटेड प्रेस' ने अनुमान लगाया था कि सन् १९५० से २००७ के बीच यौन-शोषण के केसों के समझौतों में २ बिलियन डॉलर (खरबों रुपये) से अधिक खर्च हा चुके हैं। सन् २०१२ में Bishopaccountability.org जैसे खोजकर्ताओं के मुताबिक यह ३ बिलियन डॉलर से भी ज्यादा है।

चूँकि पश्चिमी लोग अब मिशनरी और क्रिश्चियन पुजारियों द्वारा दी जा रही पीड़ाओं को जानने लगे हैं इसलिए चर्चों का ध्यान अब भारत की ओर खिंच गया है और तभी इतने सारे झूठे आरोप हमारे निर्दोष संतों पर लग रहे हैं।

लेकिन आप अकेले नहीं हैं, यूके और यूएसए में बसे हिन्दू अब शुरुआत कर रहे हैं क्रिश्चियन सुप्रिमेसिस्ट्स को चुनौती देने की। कृपया आप भी शुभ संकल्प करें कि हम विदेशों में सनातन धर्म की खूब सेवा करें।

– श्री रश्मीकांत जोशी, अध्यक्ष
नेशनल काउंसिल ऑफ हिन्दू टेम्पल्स, यूके

आवश्यकताएँ कम करो। कम आवश्यकता में आप बादशाह बन जाओगे। जो बचा हुआ समय है, वह ईश्वर में लगा दो तो महान बन जाओगे। ॐ... ॐ... ॐ...

हर आदमी एक शक्तिपुंज है। हर आदमी से उसके विचारों के आंदोलन फैलते हैं। भूमि में तमाम प्रकार के रस छुपे हैं। इन बाह्य आँखों से वह नहीं दिखता। एक ही नहर का पानी और एक ही जमीन लेकिन जैसा बीज होता है वैसा सर्जन होता है, जैसे - गन्ना, बाजरा, गेहूँ इत्यादि। ऐसे ही हममें भी अनंत-अनंत रस भरा है, अनंत-अनंत क्षमताएँ भरी हैं। हमको जैसा बाहर से वातावरण मिलता है, उसी प्रकार की अंदर सिंचाई होती है।

आपके पास बाह्य जगत का कितना ज्ञान या धन है, यह मूल्यवान नहीं है। परमात्मा यह पूछता है कि आप क्या चाहते हैं ? आपको किस चीज की प्यास है ? किसको चाहते हो, शाश्वत सुख चाहते हो या नश्वर ? नश्वर से जन्म-मरण, नरक-स्वर्ग की प्राप्ति एवं शाश्वत सुख से परमात्मा की प्राप्ति होगी। अहं को विकसित करना चाहते हो या विसर्जित करना चाहते हो ? जन्म-मरण की यात्रा का अंत करना चाहते हो या जन्म-मरण का सामान बढ़ाना चाहते हो ? आपके पास क्या है इसका मूल्य नहीं है लेकिन आप क्या हैं इसका मूल्य है। आप जिज्ञासु हैं, भक्त हैं, साधक हैं कि फिर संसार के मजदूर हैं ? सब इकट्ठा किया, बनाया, कुटुम्बियों-मित्रों को खुश रखा लेकिन मौत का झटका आया, सब चला गया - ये हैं संसार के मजदूर !

आप संसार के मजदूर हो या संसार को साधन बनाकर उपयोग करते हुए अपनी यात्रा तय करनेवाले पथिक हो ? आपमें भगवान को पाने की तड़प है या हाड़-मांस के मरनेवाले शरीर की प्रतिष्ठा चाहते हो ? संसार के मजदूर से जिज्ञासु बहुत ऊँचा होता है। रावण ने सोने की लंका पायी परंतु एक तोला भी सोना अपने साथ ले नहीं गया। संत कबीरजी कहते हैं :

क्या करिये क्या जोड़िये ,थोड़े जीवन काज।
छोड़ी-छोड़ी सब जात हैं,देह गेह धन राज॥

शरीर को, धन को, राज्य को सब छोड़-छोड़कर जा रहे हैं। सब चला-चली का मेला है। छूटनेवाले, मरनेवाले शरीर से अमर आत्मा की यात्रा कर लो। शरीर खाक में मिले उसके पहले अपनी वासना, अनात्म अज्ञान को खाक में मिला दो। यह अपने हाथ की बात है। कुटुम्बी अर्थी पर बाँधकर श्मशान में जला दें उसके

पहले ही अपनी समझ से अपने-आपको भगवान के चरणों में सौंप दो। जिन्होंने शरीर, मन, बुद्धि का सदुपयोग किया वे **सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म** स्वरूप में रहे और जो असत्, जड़, दुःखरूप अनात्म पदार्थों में लगे वे असत्, जड़, दुःख में ही भटकते रहे व भटकते रहेंगे। इसलिए आँखों की रोशनी कम होने लगे उसके पहले भीतर की आँख खोल दो। बेड़ा पार हो जायेगा ! बहुएँ मुँह मोड़ लें उसके पहले अभी से संसार से मुँह मोड़ लो तो बुढ़ापे में पश्चात्ताप नहीं होगा।

चाहे हरिभजन कर चाहे विषय कमाय।

चाहो तो परमात्मा का भजन कर मुक्त हो जाओ, अपनी २१ पीढ़ियों का उद्धार करो और चाहो तो हाय-हाय करके जगत की चीजें सँभालो, बटोरो और अंत में मृत्यु का झटका लगते ही छोड़ दो।

नौकरी-धंधा करने की मना नहीं है। यह सब करके अपनी आवश्यकता पूरी करो, इच्छाएँ पूरी करने में मत लगो। आवश्यकता है श्वास लेने की, बिना परिश्रम के पूरी होती है।

पानी और भोजन की आवश्यकता भी थोड़े परिश्रम से पूरी हो जाती है। लेकिन इच्छाएँ बढ़ जाती हैं तो बंधन होता है। जिस शरीर को जलाना है उसीको लाड़ लड़ाते रहते हैं और जो लाड़ लड़ाते हैं उन्हींकी हम नकल करते हैं। जिन्होंने शरीर का सदुपयोग किया उनकी नकल की जाय तो हमारा कल्याण हो जाय ! शुकदेवजी, संत कबीरजी, संत तुकारामजी, एकनाथजी महाराज, ज्ञानेश्वरजी महाराज, मीराबाई, स्वयंप्रभा, सुलभा, साँईं लीलाशाहजी महाराज आदि की ऊँचाई को देखकर हम अपनी सच्ची आवश्यकता व स्वभाव बनायें तो आसानी से मुक्त हो सकते हैं।

सच्चाई जल्दी ही सामने आयेगी

– कुमार अरानी, डिप्टी मेयर (आमदार), उल्हासनगर

मैं संत श्री आशारामजी बापू को १९९६ से जानता हूँ। बापूजी के आशीर्वाद से आज मैं तीन बार डिप्टी मेयर बना हूँ। बापूजी की प्रेरणा से बहुत सारे सेवाकार्य चलते रहते हैं, गौशालाएँ चलती हैं, गरीबों को काफी सारी सुविधाएँ मुहैया करायी गयी हैं। बापूजी के सेवाकार्यों व सत्संग से पूरे विश्व को लाभ हुआ है। सच सच होता है और झूठ झूठ; और सच्चाई जल्दी ही सामने आयेगी।

ऐसा हो ही नहीं सकता !

– अंकुश चौहान, ज्वेलर्स

हम लोग बापूजी के साधक हैं। हम दारू नहीं पीते, सिगरेट नहीं पीते तो विदेशी कम्पनियों का घाटा होता है। इसके अलावा मिशनरीवाले धर्मांतरण भी नहीं कर पाते हैं न, तो इन घाटों की वजह से यह षड्यंत्र हो रहा है। जो आरोप लगाये हैं ऐसा तो हो ही नहीं सकता है, बापूजी ऐसा करेंगे ही नहीं !

ये आरोप १०१ प्रतिशत गलत हैं

– ओमप्रकाश सिंह, नवी मुंबई

मैंने १९९७ में बापूजी से दीक्षा ली थी। तब से मेरे अंदर इतना बदलाव आया कि मैं बता नहीं सकता हूँ। मैं बहुत भटका हुआ था लेकिन बापूजी मुझे सही मार्ग पर लाये।

हम लोग ४० दिन का अनुष्ठान करने के लिए आश्रम में जाते हैं। हम लोग वहाँ रह चुके हैं, वहाँ ऐसा कुछ नहीं होता है। ये क्रिश्चियन मिशनरियाँ जो हैं न, ये हमारे हिन्दुस्तान को नष्ट करने के लिए तुली हुई हैं। ये आरोप १०१ प्रतिशत गलत हैं। बापू के खिलाफ जो षड्यंत्र किया गया है, इसमें कोई भी तथ्य नहीं है।

मीडिया पर विश्वास न करें

– राम निरंजन पांडे, नवी मुंबई

मीडिया सही खबरें बिल्कुल नहीं दिखा रहा है, वह पक्षपात कर रहा है। मैं आम जनता से यह गुजारिश करूँगा कि जो टीवी चैनल पर दिखाया जाता है, उसके ऊपर विश्वास न करें। कभी बापूजी के यहाँ जाकर देखें तब समझ में आयेगा कि सच्चाई क्या है। हमने देखा है।

श्रीविष्णुसहस्रनाम रसधार

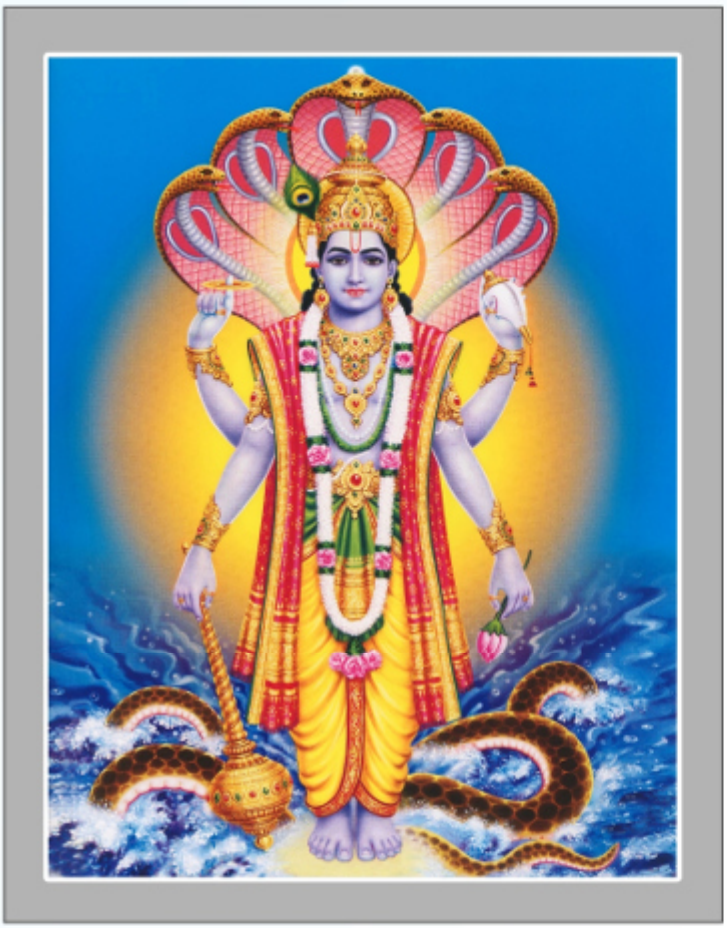

श्रीविष्णुसहस्रनाम' में भगवान का **१३वाँ** नाम आता है **'अव्ययः'** । जो कभी विपरीत भाव को प्राप्त नहीं हो।

जैसे कोई जिंदा विपरीत भाव को प्राप्त हुआ तो मुर्दा हो गया और मुर्दा विपरीत भाव को प्राप्त हुआ तो जिंदा हो गया। जो बच्चा है वह बूढ़ा हो गया और जो बूढ़ा है वह मर गया और फिर से जन्म लेकर बच्चा हो गया, यह विपरीत भाव है। परंतु जो कभी विपरीत भाव को प्राप्त नहीं होता, न बढ़ता है, न घटता है, न घिसता है, न मरता है, न जन्मता है वह अव्यय है। भगवान कभी विपरीत भाव को प्राप्त नहीं होते इसलिए वे अव्यय हैं।

न व्येति नास्य व्ययो विनाशो विकारो वा विद्यते इति 'अव्ययः' । 'जो वीत नहीं होता अर्थात् जिसका व्यय - विनाश अथवा विकार नहीं होता वह अव्यय है।'

बच्चों के हाथों में पैसा आ जाय और मौज-शौक पूरा करने में खर्च कर दें तो बोले व्यय हो गया। परंतु परमात्मा कैसा है ? कि जिसका कभी व्यय नहीं होता। यह ऐसा धन है जो खर्चा नहीं जाता, जिसका कभी नाश नहीं होता, जो कभी बिगड़ता नहीं है। वह परमात्मा अजर है, अमर है, अव्यय है। **अजरोऽमरोऽव्ययः।**

भगवान का **१४वाँ** नाम आता है **'पुरुषः'**। **पुरं शरीरं तस्मिन् शेते पुरुषः।** 'पुर अर्थात् शरीर, उसमें जो शयन करे वह पुरुष कहलाता है।' दूसरा अर्थ है, **'पूर्णत्वात् पुरुषः'** अर्थात् जो सब जगह भरपूर है उसका नाम 'पुरुष' है।

महाभारत में आता है : 'नौ द्वारोंवाले पवित्र पुर (शरीर) को व्याप्त करके इसमें इन सबसे जो महान है वह आत्मा शयन करता है, इसीलिए इसे 'पुरुष' कहते हैं। वे सर्वत्र परिपूर्ण हैं तथा सबके निवासस्थान हैं, इसलिए 'पुरुष' हैं और सब पुरुषों में उत्तम होने के कारण उनकी 'पुरुषोत्तम' संज्ञा है।' **(शांति व उद्योग पर्व)**

हम लोगों ने कपड़ा, भोजन, रिश्तेदार-नातेदार देखे लेकिन जो सबके दिल में बैठा हुआ है उस पूर्णपुरुष, पुरुषोत्तम को तो नहीं देखा। अरे, चाम का पर्दा और हड्डी-मांस का पर्दा हटाकर देखो कि तुम्हारे पास क्या है ! वही है। सिवाय परमात्मा के दूसरी कोई चीज नहीं है। उसकी यही पहचान है कि वह सबके दिल में बैठा है।

'संस्कृति रक्षा सभा' ने किया षड्यंत्र का विरोध

२९ दिसम्बर को अमरावती (महाराष्ट्र) में 'संस्कृति रक्षा सभा' का आयोजन हुआ। इसमें विभिन्न हिन्दू संगठनों ने भाग लिया और पूज्य बापूजी के प्रति पूर्ण समर्थन व्यक्त करते हुए बापूजी के खिलाफ रचे गये षड्यंत्र का विरोध किया।

श्री राजेन्द्र पांडे, अम्बादेवी संस्थान के अधिवक्ता तथा सूचना अधिकार कानून के राष्ट्रीय मार्गदर्शक : परम पूज्य बापूजी गुनहगार नहीं हैं फिर भी इतना समय होने के बाद भी जमानत नहीं मिल रही है, क्योंकि यह एक षड्यंत्र है और प्रशासन इस षड्यंत्र में सम्मिलित है। जमानत प्रत्येक आरोपी का अधिकार है, वह उसे मिलनी ही चाहिए।

श्री धीरज राऊत, हिन्दू जनजागृति समिति : परम पूज्य संत आशारामजी बापू संस्कृति के रक्षण के लिए सम्पूर्ण जीवन समर्पित करनेवाले संत हैं। अगर हम संतों और देवताओं का अपमान सहन कर रहे हैं तो हमारे किसी भी पुण्यकर्म का अर्थ नहीं रहता।

हरि भक्त परायण श्री शालीकराम खेड़कर महाराज, जिला उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र वारकरी महामंडल : साधु-संत हमारे माता-पिता होते हैं। परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू को परेशान किया जा रहा है, ऐसे समय में भक्तों को भजन के साथ वीरता का प्रदर्शन करना आवश्यक है।

संसाररूपी हाथी को विदीर्ण करनेवाले सिंह एवं भवरोग निवारक धन्वंतरि

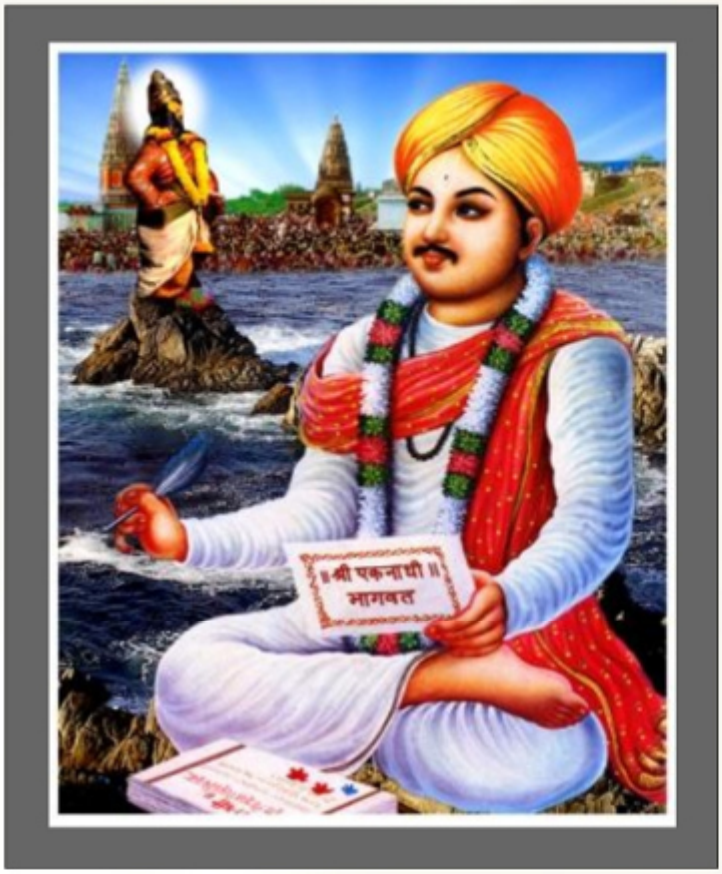

संत एकनाथजी महाराज जीव का भवरोग निवारनेवाले सद्गुरु की अनुपम महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं : ''सद्गुरुरूपी धन्वंतरि को मैं प्रणाम करता हूँ। इस संसार में भवरोग की बाधा दूर करने में उनके जैसा समर्थ अन्य कोई नहीं है। भवरोग के संताप से लोग आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक इन त्रिविध तापों से झुलस रहे हैं। 'मैं' और 'मेरा' जैसे संकल्पों से वे सदा बड़बड़ाते रहते हैं। चित्त में द्वैतभावना आने से उनका मुँह कड़वा हो जाता है इसीलिए वे मुँह से विष की तरह कड़वी बातें करते रहते हैं। व्याधि से पीड़ित होने के कारण वे विवेक को लात मार देते हैं और धैर्य को झटककर वासनारूपी जंगल में भटकने लगते हैं तथा महत्त्वाकांक्षाओं के सागर में डूबते-उतराते हैं। भवरोग के भ्रम में वे कैसा पागलों जैसा आचरण करते हैं! जो नहीं खाना चाहिए उसे खाने लगते हैं, जो नहीं करना चाहिए वह करते दिखायी देते हैं और स्त्रियों के पीछे पागलों की तरह दौड़ते रहते हैं। उनकी ज्ञानशक्ति क्षीण हो जाती है। इस प्रकार सदा कुपथ्य करते रहने के कारण उनमें विकाररूपी जीर्ण ज्वर उत्पन्न होने लगता है।

इन विकारों के कारण जीव में चिंता उत्पन्न हो जाती है और सुख नष्ट हो जाता है। इस रोग का ज्वर इतना विचित्र रहता है कि जो मधुर परमार्थ है वह तो कड़वा लगने लगता है और विषैले विषय मधुर लगते हैं! इस रोग को निर्मूल करने के लिए सत्कथारूपी काढ़ा दिया जाय तो उसको रुचता ही नहीं। इस प्रकार वह पूरी तरह रोगग्रस्त होकर रहता है।

ऐसा यह जबरदस्त रोग देखकर सद्गुरुरूपी चतुर वैद्य आगे बढ़ते हैं और कृपादृष्टि से उसकी ओर देखकर उसका रोग तत्काल ठीक कर देते हैं।

रोगी का महान भाग्य उदित तब होता है जब वह गुरुकृपा का कूर्मावलोकन (कछुए की तरह दूर से ही गुरुकृपा को प्राप्त करते रहना) करने लगता है और यह रोगी के लिए अमृतपान की तरह सिद्ध होकर उसे तत्काल सावधान कर देता है। सावधान हो जाने पर वह रोगी नित्य-अनित्य विवेक का पाचन अत्यंत सावधानी से करने लगता है। किंतु इतने से उसका जीर्ण ज्वर पूर्णरूप से दूर नहीं होता। इसीलिए सद्गुरु उसे रसायन देना शुरू करते हैं। रोगी को (ॐकार की) अर्धमात्रारूपी अक्षर-रस देते ही उसका क्षयरोग दूर होकर वह पहले जैसा अक्षय (अविनाशी) हो जाता है।

रोगी कहीं फिर से भीषण कुपथ्य न कर दे इसलिए सद्गुरुरूपी वैद्य उसको वैराग्य की नजर देते हैं और निरंतर आत्मानुसंधान का पथ्य देकर संसाररूपी रोग का निवारण करते हैं। रोगी के पूरी तरह ठीक हो जाने पर उसे तेज भूख लगती है। इसलिए वह मानसिक चिंता की लाई बनाकर भकाभक एक ही

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सेक्स एजुकेशन से होता है बच्चों का दिमाग खराब

आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश एवं विधिक सेवा समिति के अध्यक्ष एल. नरसिम्हा रेड्डी ने हाईस्कूल में सेक्स एजुकेशन को गलत ठहराते हुए कहा है कि 'इससे बच्चों का दिमाग खराब हुआ है।' उन्होंने बाल यौन-शोषण से संबंधित एक कार्यक्रम में कहा : '२००५-०६ में हाईस्कूलों में लागू हुए सेक्स एजुकेशन प्रोग्राम ने कम उम्र में ही बच्चों का दिमाग खराब किया है। बच्चों को सही राह पर लाने की जिम्मेदारी अभिभावकों की है। संयुक्त परिवार प्रणाली के ध्वस्त होने से बच्चों में असुरक्षा का भाव पैदा हुआ है।' **('अमर उजाला' के आधार पर)**

वास्तव में अब 'सेक्स एजुकेशन' के स्थान पर 'संयम शिक्षा' की आवश्यकता है। अमेरिका जैसे देशों को भी संयम शिक्षा की ओर मुड़ना पड़ा। बापूजी द्वारा चलाये जा रहे 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' युवाधन सुरक्षा अभियान की देश को जरूरत है।

(पृष्ठ १३ का शेष)

क्षण में खा जाता है। गुड़ और चीनी की चाशनी की तरह कर्म-अकर्म के लड्डू, मीठे या कड़वे कहे बिना, अपनी इच्छा से खाने लग जाता है।

'ब्रह्मास्मि' की चरम प्रवृत्ति के सुंदर पकवान जैसे ही दिखायी पड़े, उन्हें तत्काल खाकर वह माया के पीछे पड़ जाता है। तब माया उसके डर से भागकर अपने मिथ्यात्व में विलीन हो जाती है। सद्गुरुकृपा से उसका 'स्व' आनंद पुष्ट होता है और संसार-रोग बिल्कुल नष्ट होकर मोक्ष की प्राप्ति होती है। किंतु जो सद्गुरु की महिमा को भूलकर मोक्ष को गुरु-भजन से श्रेष्ठ मानते हैं, वे मूर्ख हैं क्योंकि मोक्ष तो गुरुचरणों का सेवक है।

हमें तो सद्गुरु-दृष्टि से ही परम स्वास्थ्य-लाभ होता है। हम सद्गुरु स्तुति से ही संसार में पूजनीय होते हैं। गुरुसेवा के कारण ही हम भाग्यवान हैं और हमारा सामर्थ्य हमें गुरु-स्तुति से ही प्राप्त हुआ है। सद्गुरु का नाम ही हमारे लिए वेदशास्त्र है, सारे मंत्रों की अपेक्षा सद्गुरु का नाम ही हमें अधिक श्रेष्ठ मालूम होता है। एकमात्र सद्गुरु-तीर्थ सारे तीर्थों को पवित्र करता है।

हे गुरुदेव ! आपके उदार गुणों का वर्णन करते-करते मन को तृप्ति नहीं हो पाती। हे संसाररूपी हाथी को विदीर्ण करनेवाले सिंह सद्गुरु ! आपकी जय हो।''

(श्री एकनाथी भागवत, अध्याय : १०)

आप आँख खोलिये, सोचिये और समझिये

- सीमा सिंह, कांदिवली, मुंबई

अगस्त २००२ में गोरेगाँव आश्रम में वैद्य अमृत प्रजापति द्वारा मेरा इलाज चल रहा था। घर में मुझे कुछ स्वास्थ्यसंबंधी समस्या हुई तो मैंने उसको फोन किया। उसने मुझे दवाई बतायी और बोला कि 'फोन पर अगर दवा बताता हूँ तो उसका ३०० रुपया चार्ज लगता है।' मुझे उस दवा से आराम नहीं लगा तो मैंने दूसरे दिन फिर फोन किया। फिर जब मैं स्वास्थ्य दिखाने आश्रम गयी तो उसने मुझसे बोला कि ''आपने फोन पर दो बार दवा पूछी है, आपका ६०० रुपया होता है।'' उस समय दवाई के पैसों के अलावा मेरे पास ५०० रुपये थे, वे उसको दे दिये।

बाद में जब मैं आश्रम में ज्यादा आने-जाने लगी, तब मुझे मालूम पड़ा कि वहाँ दवाइयाँ बताने का तो कोई चार्ज ही नहीं है। और भी लोगों ने अमृत वैद्य द्वारा पैसे लूटने की बात बतायी। ऐसे और कई घिनौने कार्य करने के कारण उसे आश्रम से निकाल दिया गया।

आज वह चैनलों पर जा-जाकर धर्मांतरणवालों की सिखायी हुई क्या-क्या बकवास करता है। दुष्कृत्यों के कारण आश्रम से निकाले गये चंद लोगों

को चैनलों पर बुलाया जाता है । हमारे जैसे करोड़ों साधक भाई-बहनों को मीडियावाले क्यों नहीं बुलाते ?

मेरे जैसी लाखों-लाखों महिलाएँ बापूजी से जुड़ी हैं। सत्संग, ध्यानयोग शिविर आदि के समय हम कई दिनों तक आश्रमों में रहे हैं। हमें किसी तरह की कोई भी दिक्कत नहीं हुई । तीन महिलाओं ने कुछ बेबुनियाद आरोप लगाये, उन्हें मीडियावाले पूरी दुनिया को सुना रहे हैं । पूज्य बापूजी और श्री नारायण साँईं के साथ-साथ माता लक्ष्मीदेवीजी और भारतीदेवीजी को भी षड्यंत्र में फँसाने का प्रयत्न किया गया । एक औरत होने के नाते देश की महिलाओं से मैं पूछती हूँ कि क्या अपने भाई या अपने पिता अथवा अपने पति को कोई महिला ऐसे कार्य में सहयोग करेगी ? यह तो सम्भव ही नहीं है, यह षड्यंत्र रचा जा रहा है।

पूज्य बापूजी ने धर्म का डंका देश ही नहीं विदेशों में भी बजाया है । हमारी हिन्दू संस्कृति की महानता समझाकर बापूजी ने कितने लोगों को धर्मांतरण से बचाया । बापूजी ने 'वेलेंटाइन डे' की जगह 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' शुरू करवाया । गरीबों-आदिवासियों एवं संस्कृति के उत्थान के कितने कार्य करते - करवाते हैं बापूजी ! बापूजी चाहते हैं कि हमारे देश का भविष्य उज्ज्वल हो, हमारा देश फिर से विश्वगुरु बने।

जो हिन्दू संस्कृति को मिटाना चाहते हैं उन विधर्मियों को, विदेशी कम्पनियों को, चैनलवालों को ये सब नहीं सुहाया और इसलिए वे ऐसे षड्यंत्र कर रहे हैं।

मैं देशवासियों से प्रार्थना करती हूँ कि आप इस बात को समझिये कि बापूजी को जेल में डाल देना या बापूजी को बदनाम करना हमारी हिन्दू संस्कृति की जड़ें काटने का एक षड्यंत्र है। आप आँख खोलिये, सोचिये और समझिये कि एक ७४ साल के बुजुर्ग, आपके घर में दादा होंगे, पिता होंगे, क्या ऐसा कर सकते हैं ? नहीं न ! तो देश के एक महान संत ऐसा कैसे कर सकते हैं ? जिन्होंने करोड़ों-करोड़ों लोगों को दुर्व्यसनों से छुड़ाया, संयम व ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़ाया ऐसे बापू ऐसा कुछ कर ही नहीं सकते ! ऐसा कुछ हुआ नहीं। लड़की व मेडिकल रिपोर्ट भी बताती है कि 'रेप नहीं हुआ।' फिर भी उसे समझा-बुझाकर प्रलोभन दिया, क्या-क्या साजिश रची, गंदे आरोप लगवाये । लड़की का भाई गुरुकुल से जब जाता है तो कैमरे के आगे गुरुकुल की प्रशंसा करता है कि बहुत अच्छी तरह से रखा गया, खिलाया-पिलाया, अच्छे संस्कार देते हैं।

उस लड़के को जब छिंदवाड़ा पुलिस कस्टडी में ले जाया गया और छिपे हुए विधर्मियों ने जब प्रेस कॉन्फ्रेंस करवायी तो बोला कि खाने को नहीं देते, भूखा रखा जाता है, मछली या मांस का टुकड़ा देते हैं, मार-पीट करते हैं।

और भी काफी गंदी बकवास करवाकर मीडिया में उछाला गया था। लड़के की माँ ने भी इस बयान को अस्वीकर किया । उसकी माँ ने कहा : इससे झूठ बुलवाया गया । ऐसे ही उसकी बहन से भी झूठ बुलवाया गया । एक सुनियोजित साजिश के तहत बापूजी को फँसाया गया है।

facebook

Subramanian Swamy

बिकाऊ मीडिया की असलियत

जाने-माने न्यायविद् श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी ने अपने फेसबुक एकाउंट पर मीडिया चैनलों की असलियत को उजागर किया है। २००४ में जब शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी के ऊपर हत्या का आरोप लगा तो न्यूज चैनलों ने उन्हें बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी लेकिन जब न्यायालय ने उन्हें निर्दोष घोषित कर दिया तो उन्हीं न्यूज चैनलों ने कितना कवरेज दिया, जरा इस पर नजर डालते हैं :

चैनल	बदनाम करने हेतु कवरेज (लगभग)	निर्दोष सिद्ध होने पर कवरेज (लगभग)
INDIA TV	४५० घंटे	० मिनट
IBN 7	३२५ घंटे	७० मिनट
आज तक	३५६ घंटे	३ मिनट
STAR न्यूज़	३४४ घंटे	१ मिनट
NDTV	२८० घंटे	३ मिनट
7 NEWS	२६० घंटे	१ मिनट

यह है बिकाऊ मीडिया की असलियत ! इसी प्रकार समस्त हिन्दू संतों को बदनाम करने का एक षड्यंत्र है, जिसमें मीडिया अहम् भूमिका निभा रहा है। फिर चाहे स्वामी नित्यानंदजी हों, चाहे कृपालुजी महाराज हों या फिर अब पूज्य संत श्री आशारामजी बापू हों। इन सभी संतों को बदनाम करने के लिए विधर्मियों के फंड पर चलनेवाले मीडिया ने ऐसे ही राग अलापा है।

प्रीति का पथ

– स्वामी श्री अखंडानंदजी सरस्वती

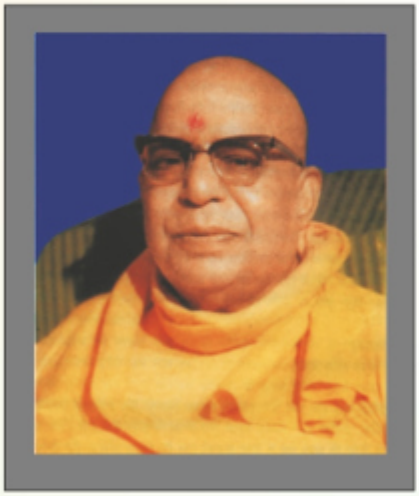

सब ईश्वर की संतान हैं, सब ईश्वर के आत्मा हैं, फिर भी जगत की व्यवस्था चलाने के लिए कोई मर्यादा रखनी पड़ती है। वह मर्यादा क्या है ? जो ईश्वर के सम्मुख होता है, ईश्वर से अपनी रक्षा चाहता है ईश्वर उसकी रक्षा करता है। जो ईश्वर से विमुख होता है, ईश्वर को नहीं मानता है, ईश्वर से प्रार्थना नहीं करता है वह है तो ईश्वर का ही परंतु ईश्वर के अनुग्रह को ग्रहण करने की योग्यता उसके अंतःकरण में नहीं। ईश्वर के कृपा-प्रसाद को, आत्मीयता को, ज्ञान को, प्यार को, अनुग्रह को ग्रहण करने के लिए उनके सम्मुख होना पड़ता है - **सामुख्यवैमुख्याभ्याम् व्यवस्था।** ईश्वर के सम्मुख होने के लिए आत्मनिवेदन करना पड़ता है। अपने अंदर जो दोष हैं, दीनता है, हीनता है, मलिनता है वह निष्कपट होकर ईश्वर से बोलकर निवेदन करनी पड़ती है। यह नहीं कि वह अंतर्यामी है, सबकी जानता है तो कहने की क्या आवश्यकता है ?

बिना सद्‌गुण-चिंतन के अंतःकरण सद्‌भाव-सम्पन्न नहीं हो सकता। इसलिए परमार्थ के पथिक को सावधान रहकर अपने को सद्‌भाव एवं सद्‌गुणों से अलंकृत करना चाहिए। उसको देखकर भगवान प्रसन्न होते हैं और दूसरे लोगों के मन में भी भगवान के सम्मुख होने की भावना उत्पन्न होती है। इससे भगवान के भक्त बढ़ते हैं और भगवान का सुयश फैलता है।

टीवी चैनलों पर नियंत्रण के लिए सरकार बनाये दिशानिर्देश

सर्वोच्च न्यायालय ने तीन केन्द्रीय मंत्रालय, भारतीय प्रेस परिषद और अन्य संबंधित संस्थाओं को टीवी चैनलों पर प्रसारित की जानेवाली सामग्री के नियंत्रण के लिए दिशानिर्देश बनाने को कहा है।

मुख्य न्यायाधीश पी. सदाशिवम और न्यायाधीश रंजन गोगोई ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, कानून एवं न्याय मंत्रालय, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय को नोटिस जारी किया है, साथ ही चुनाव आयोग, न्यूज ब्रोडकास्टर्स एसोसिएशन, इंडियन ब्रोडकास्टिंग फाउंडेशन और एडवर्टाइजिंग स्टैंडर्ड्स काउंसिल ऑफ इंडिया को भी एक पंजीकृत न्यास 'हिन्दू जनजागृति समिति' द्वारा दाखिल जनहित याचिका पर जवाब देने को कहा है। आरोप है कि टीवी चैनलों के नियंत्रण के लिए कोई भी नियमन विभाग मौजूद नहीं है।

याचिका दायर करनेवाले मुंबई के वकील राजीव पांडे का कहना है कि ''यह याचिका जनता के हित में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रभावशाली नियंत्रण के मुद्दे को लेकर सार्वजनिक नैतिकता, सार्वजनिक सभ्यता, सामाजिक शांति और सार्वजनिक व्यवस्था के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाती है।''

याचिका कहती है कि 'टीवी चैनलों के नियंत्रण के लिए, जैसे प्रिंट मीडिया के लिए 'भारतीय प्रेस परिषद' है, वैसा कोई नियंत्रण विभाग नहीं है। टीवी ऑडियो-विजुअल मीडिया होने के बावजूद उस पर कोई सेंसरशिप नहीं है। मतलब कोई भी फिल्म जो यूँ तो बिना सेंसर सर्टिफिकेट के रिलीज नहीं हो सकती, वह सीधी टीवी चैनलों पर रिलीज हो सकती है। इससे कितने दुष्परिणाम आ रहे हैं व सनसनी फैलानेवाले चैनल महापुरुषों को बदनाम करने की कितनी अति कर रहे हैं!

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के द्वारा आत्म-नियमन बिल्कुल अप्रभावी रहा है क्योंकि आत्म-नियमन करनेवाले निकाय प्रायवेट कम्पनियाँ हैं जो कि मीडिया घरानों के नियंत्रण में हैं।

निजी कम्पनियों की शक्ति सीमित है। वे ज्यादा-से-ज्यादा १ लाख रुपये जुर्माना कर सकते हैं जो उनकी सामूहिक पूँजी में चला जाता है। इससे मीडिया के दुर्व्यवहार का शिकार हुए व्यक्ति को कोई मुआवजा नहीं मिलता। इन निकायों पर सरकार का कोई नियंत्रण भी नहीं है। ये निकाय लोगों के प्रति जवाबदेह नहीं हैं क्योंकि वे राज्य के अंग नहीं हैं। टीवी चैनलों की तुलना में आपत्तिजनक वेबसाइट पर तुरंत रोक लगाने का सूचना प्रौद्योगिकी आपात अवरुद्ध से संबंधित कानून, नियम २००९ **(Procedure and Safeguards for blocking for access of information by public)** बहुत अधिक कठोर है। ऐसा कोई कानून टीवी चैनलों के लिए नहीं है। इस तरह टीवी चैनल पर आपत्तिजनक कार्यक्रम आपत्तिजनक वेबसाइट से ज्यादा नुकसान कर सकता है। फिर भी टीवी चैनल की सामग्री पर अंकुश लगाने के लिए कोई कठोर कानून नहीं है।

गलती करनेवाले चैनलों के खिलाफ सरकारी अधिकारियों द्वारा की गयी विलम्बित कार्यवाही से यह स्पष्ट होता है कि केन्द्र सरकार का रवैया गम्भीर नहीं है।

केन्द्र सरकार भी अपने सामर्थ्य का उपयोग करके इन चैनलों के लाइसेंस निलम्बित या निरस्त करके उनको नियंत्रित करने में गैर-गम्भीर है। इस तरह एक जबरदस्त ढंग से उन चैनलों का प्रोग्राम कोड का उल्लंघन करने का उत्साह बढ़ाया गया है और इससे पेड न्यूज, ब्लैकमेल से हफ्ता वसूली और टीआरपी के लिए चरित्रहनन के रूप में दुराचार का जन्म हुआ है।'

कसौटियों से घबराये नहीं

-पूज्य बापूजी

एक बीज को वृक्ष बनने में कितने विघ्न आते हैं! कभी पानी मिला नहीं, कभी आँधी आयी, कभी तूफान आया, कभी पशु-पक्षियों ने मुँह-चोंचे मारीं... यह सब सहते हुए वृक्ष खड़े हैं। तुम भी कसौटियों को सहन करते एवं उन पर खरे उतरते हुए ईश्वर के लिए खड़े हो जाओ तो तुम अपने ब्रह्मस्वभाव में जाग जाओगे। परमात्मा की प्राप्ति की दिशा में कसौटियाँ तो सचमुच कल्याण की परम सोपान हैं। जिसे तुम प्रतिकूलता कहते हो, सचमुच वह वरदान है क्योंकि अनुकूलता में विवेक सोता है, दुःख में विवेक जागता है। कसौटियों के समय घबराने से तुम दुर्बल हो जाते हो, तुम्हारा मनोबल क्षीण हो जाता है। परंतु हम सुख-दुःख का सदुपयोग कर लें तो ईश्वर हमारे पास प्रकट हो जायेंगे।

मेवों द्वारा बल व स्वास्थ्य प्राप्ति

(१) अखरोट : १० ग्राम अखरोट को गाय के घी में भूनकर मिश्री मिला के खाने से स्मरणशक्ति तीव्र होती है व मानसिक थकावट दूर हो जाती है। २० ग्राम अखरोट, मिश्री व केसर को दूध में मिलाकर पीने से नपुंसकता में लाभ होता है।

(२) अंजीर : इसमें लौह प्रचुर मात्रा में होने से रक्त की वृद्धि होती है। यह रक्त की शुद्धि भी करता है। इसमें निहित विटामिन 'ए' नेत्रज्योति की सुरक्षा करता है। अंजीर में पेट के मल को निष्कासित करने की विशेष क्षमता है। २ सूखे अंजीर रात को पानी में भिगोकर सुबह और सुबह भिगोकर शाम को खाने से पुरानी खाँसी, दमा, टी.बी., रक्तपित्त, पुराना गठिया रोग, बवासीर, पित्तजन्य त्वचाविकारों में लाभ होता है।

(३) काजू : यह स्निग्ध, पौष्टिक, वायुशामक, पाचनशक्ति बढ़ानेवाला, जठराग्नि-प्रदीपक व शांतिदायक है। सुबह शहद के साथ ५-७ काजू खाने से दिमाग की कमजोरी मिटती है। किशमिश के साथ सेवन करने से रक्त की वृद्धि होती है। पानी में पीसकर चटनी बनाकर खाने से अजीर्ण, अफरा मिट जाता है। दूध के साथ सेवन करने से हृदय, मस्तिष्क व नाड़ी संस्थान को बल मिलता है।

(४) बादाम : यह उत्कृष्ट वायुशामक व सप्तधातुवर्धक है। ५ भीगे हुए बादाम छिलके उतारकर

२-३ काली मिर्च के साथ खूब पीस के मक्खन-मिश्री अथवा दूध के साथ सेवन करने से स्मरणशक्ति व नेत्रज्योति बढ़ती है।

अमेरिकन बादाम बलहीन, सत्त्व निकाले हुए होते हैं। यदि मामरी बादाम मिल जायें तो रात का भिगोया हुआ १ बादाम सुबह दाँतों से पीसकर खाने से १० बादाम खाने की ताकत मिलती है।

बादाम का तेल नाक में डालने से मस्तिष्क को शीघ्र ही बल मिलता है, सिरदर्द भी मिट जाता है। इसका निरंतर प्रयोग हिस्टिरिया में बहुत लाभदायी है। **गर्भवती स्त्री को ९वाँ महीना लगते ही १० ग्राम बादाम का तेल दूध व मिश्री के साथ देने से प्रसव सुलभ हो जाता है।**

(५) पिस्ता : सूखे मेवों में आँतों को बल प्रदान करने में पिस्ता सर्वोत्तम है।

सावधानी : सूखे मेवों का सेवन विशेषतः सर्दियों में तथा मात्रावत् करना उचित है।

*****

लौकी द्वारा स्वास्थ्य-सुरक्षा

लौकी पौष्टिक, कफ-पित्त शामक, वीर्यवर्धक, रुचिकर, शीतल, रेचक तथा हृदय के लिए बलप्रद, गर्भपोषक तथा गर्भावस्था की कब्जियत दूर करती है। इसका तेल मस्तिष्क की गर्मी दूर करता है। क्षयरोगियों के लिए लौकी बहुत हितकर है।

* २० से २५ मि.ली. लौकी के रस में आधा चम्मच शहद या शक्कर मिलाकर लेने से शरीर का दाह, गले की जलन, रक्तविकार, फोड़े, शीतपित्त आदि रोगों में लाभ होता है।

* २ से ४ चम्मच लौकी के रस में पाव चम्मच जीरा चूर्ण व एक चम्मच शहद मिलाकर सुबह खाली पेट लेने से हृदय के स्नायुओं को बल मिलता है, पित्त के कारण होनेवाली पेट और छाती की जलन कम होती है, भोजन में रुचि बढ़ती है। प्रयोग के एक घंटे बाद तक कुछ न लें।

* ताजी लौकी को कद्दूकश कर घी में भून लें। इसमें मिश्री, जीरा, सेंधा नमक डाल के खाने से धातु का पोषण होकर शरीर स्वस्थ बनता है। इससे शौच साफ आता है।

* हृदयरोगियों के लिए उबली लौकी में धनिया, जीरा, हल्दी और हरा धनिया डालकर खाना लाभदायक है।

सावधानी : * अतिसार, सर्दी-खाँसी, दमे के रोगी लौकी न खायें।

* पुरानी (पकी) लौकी से कब्जियत होने के कारण उसका उपयोग न करें।

* कड़वी लौकी (तुमड़ी) विषैली होने से उसका सेवन निषिद्ध है।

बुद्धि-परीक्षण

(१) तपस्या के मूर्तिमंत और जल्दी से हैं प्रसन्न होते।
समाधि लगाते वर्षों की पर उठकर नृत्य हैं करते॥
(२) एक भगवान की पूजा की, दूजे से वैर लिया।
लौकिक ज्ञान-भंडार था, पर अहंकार ने नाश किया॥
पापकर्म से सनी वैभव नगरी, हर ली एक सती नारी।
भर गयी जब पाप की गगरी, जल गयी नगरी सारी॥
(३) कलिकाल २१वीं सदी, पर ब्रह्मज्ञान को सुलभ किया।
आह्लाद लुटा के ज्ञान-ध्यान से, भक्तों का जीवन धन्य किया॥
सुख-दुःख में समता पायी, जिसने उनका ज्ञान पचाया।
कौन ऐसे हयात महापुरुष, सुख-शांति जिनकी छाया॥

उत्तर : (१) भगवान शिव (२) रावण (३) पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

अलख पुरुष की आरसी

-पूज्य बापूजी

संत कबीरजी से किसीने कहा : ''हम निर्गुण, निराकार परमात्मा को तो देख नहीं पाते, फिर भी देखे बिना रह न जायें ऐसा कोई उपाय बताइये।''

कबीरजी ने कहा : ''परमात्मा को देखने के लिए ये चमड़े की आँखें काम नहीं आतीं। इन आँखों से तो परमात्मा नहीं दिखेगा परंतु यदि तुम देखना ही चाहते हो तो जिनके हृदय में आत्मस्वरूपाकार वृत्ति प्रकट हुई है, जिनके हृदय में समतारूपी परमात्मा प्रकट हुआ है, अद्वैत ज्ञानरूपी परमात्मा प्रकट हुआ है ऐसे किन्हीं महापुरुष को तुम देख सकते हो । जिन्हें देखकर तुम्हें परमात्मा याद आ जायें, जिस दिल में ईश्वर निरावरण हुआ है, उन संत-महापुरुष को देख सकते हो।

अलख पुरुष की आरसी साधु का ही देह।
लखा जो चाहे अलख को इन्हीं में तू लख लेह ॥''

साधु की देह एक ऐसा दर्पण है जिसमें तुम उस अलख पुरुष परमात्मा के दर्शन कर सकते हो । इसलिए अलख पुरुष को देखना चाहते हो तो ऐसे किन्हीं परमात्मा के प्यारे आत्मसाक्षात्कारी परमात्मस्वरूप संत का बार-बार सत्संग व सान्निध्य पाना चाहिए।

शुद्ध हृदय से, ईमानदारी से उन महापुरुष के गुणों का चिंतन करके हृदय को धन्यवाद से भरते जाओगे तो तुम्हारे हृदय में उस परमात्मा को प्रकट होने में देर न लगेगी। परमात्मा को पाना इतना सरल होते हुए भी लोग इसका फायदा तो ले नहीं पाते वरन्

अपनी क्षुद्र मति से उनको नापते रहते हैं और अपना ही नुकसान करते हैं।

वसिष्ठजी महाराज कहते हैं : ''हे रामजी ! अज्ञानी जो कुछ मेरे लिए कहते और हँसते हैं, सो सब मैं जानता हूँ परंतु मेरा दया का स्वभाव है, इससे मैं चाहता हूँ कि किसी प्रकार वे नरकरूप संसार से निकलें। इसी कारण मैं उपदेश करता हूँ।''

अयोध्या नरेश दशरथ जिनके चरणों में अपना सिर झुकाकर अपने को सौभाग्यशाली मानते हैं और श्रीराम जिनके शिष्य हैं, ऐसे गुरु वसिष्ठजी को भी उन निंदकों ने क्या-क्या नहीं कहा होगा ? तो तुम्हारे लिए भी कोई कुछ कह दे तो चिंता मत करना।

अपनी महिमा में मस्त रहनेवाले संतों-महापुरुषों पर लोगों की अच्छी-बुरी बातों का कोई असर नहीं पड़ता है परंतु जो संतों का आदर, पूजन, सेवा करता है वह अपना भाग्य उज्ज्वल बनाता है, उसका हृदय आत्मसुख से सम्पन्न होने लगता है और जो उनकी निंदा करता है वह अपने भाग्य को अंधकार में डालता है । संतों की नजर में कोई अच्छा-बुरा नहीं होता है। संतों की नजर में तो बस, केवल वही होता है - **एकमेवाद्वितीयोऽहम्।**

जिसकी जैसी भावना, जिसकी जैसी दृष्टि और जिसका जैसा प्रेम, वैसा ही उसको लाभ या हानि होती है।

करमी आपो आपनी के नेड़ै के दूरि।

अपनी ही करनी से, अपने ही भावों से आप स्वयं को अपने गुरु के, संत के नजदीक अनुभव करते हो और अपने ही भावों से दूरी का अनुभव करते हो। संत के हृदय में अपना-पराया कुछ नहीं होता है लेकिन कलियुगी अल्प मतिवाले गलत बात तो बहुत जल्दी स्वीकार कर लेंगे, अच्छी बात को स्वीकार नहीं करेंगे । सच्चाई फैलाने में तो जीवन पूरा हो जाता है परंतु कुछ अफवाह फैलानी है तो फटाफट फैल जाती है। जो लोग तुरंत कुप्रचार के शिकार बन जाते हैं वे अल्प मतिवाले हैं, उनकी विचारशक्ति कुंठित हो गयी है।

गुजरात में नरसिंह मेहता नाम के प्रसिद्ध संत हो गये । उनके लिए भी ईर्ष्यालु लोगों ने कई बार अफवाहें फैलायी थीं, गलत बातों का खूब प्रचार किया था लेकिन अफवाहें फैलानेवाले कौन-से नरक में गये होंगे, किस माता के गर्भ में लटकते होंगे यह हम और तुम नहीं जानते परंतु नरसिंह मेहता को तो आज भी करोड़ों लोग जानते-मानते हैं, आदर से उनका नाम लेते हैं।

नरसिंह मेहता के बारे में जब अफवाहें गलत साबित हुईं, जब लोगों को पता चला कि नरसिंह मेहता की दृढ़ भक्ति के कारण चमत्कार होते हैं तो चमत्कार के प्यारे उनके आस-पास इकट्ठे होते रहते थे। वे चमत्कार के भक्त थे, नरसिंह मेहता के भक्त नहीं थे।

ऐसा कई संतों के साथ होता है । जब तक सब ठीक लगता है तब तक तो लोग संत के साथ होते हैं, अपने को संत का भक्त कहलाते हैं किंतु जरा-सी कुछ दिक्कत लगी कि खिसक जाते हैं । ऐसे लोग सुविधा के भक्त होते हैं, संत के भक्त नहीं होते। संत का भक्त वही है कि कितनी भी विपरीत परिस्थिति आ जाय किंतु उसका भक्तिभाव नहीं छूटता । सुविधा के भक्त तो कब उलझ जायें, कब भाग जायें पता नहीं। जो निःस्वार्थ भक्त होते हैं वे अडिग रहते हैं, कभी फरियाद नहीं करते । वे तो संत के दर्शन, सत्संग से और उनकी महिमा का गुणगान करके आनंदित, उल्लसित, रोमांचित होते हैं । किसीकी निंदा या विरोध से संत को कोई हानि नहीं होती और किसीके द्वारा प्रशंसा करने से वे बड़े नहीं हो जाते।

सच्चे संतों का आदर-पूजन जिनसे नहीं सहा गया, ऐसे ईर्ष्यालु लोगों ने ही जोर-शोर से कुप्रचार किया है। संतों के व्यवहार को पाखंड बताकर मानो उन्होंने ही धर्म के प्रचार का ठेका उठाया है । ऐसे लोगों को पता ही नहीं कि वे क्या कर रहे हैं । जब कबीरजी आये तब निंदकों ने कहा : 'हम धर्म की जय

कर रहे हैं।' जब सुकरात आये तब राजा तथा अन्य कुछ लोगों ने कहा : 'हम धर्म की जय कर रहे हैं।' इस प्रकार संतों पर जुल्म किये गये।

पिछले दो हजार वर्षों में जो धर्म-पंथ हुए हैं, उन्होंने हिन्दू धर्म की गरिमा को न जानकर ऐसी-ऐसी साजिशें कीं कि हिन्दू हाथे बन गये साजिश के और आपस में लड़-भिड़े। अपने ही लोग संतों की निंदा करके हिन्दू संस्कृति को क्षीण करने का जघन्य अपराध करते आ रहे हैं। लेकिन चाहे कैसी भी मुसीबतें आयीं, कितनी ही विपरीत परिस्थितियाँ आयीं तो भी जो सच्चे भक्त थे, श्रद्धालु थे, उन लोगों ने सच्चे संतों की शरण नहीं छोड़ी और दैवी कार्य नहीं छोड़ा। निंदा की दलदल में फँसे नहीं, कुप्रचार के आँधी-तूफानों में पतझड़ की नाईं गिरे नहीं; डटे रहे, धनभागी हुए। संत कबीरजी के साथ सलुका-मलुका, गुरु नानकजी के साथ बाला-मरदाना ऐसे श्रद्धालु शिष्य थे, जिनके नाम इतिहास में अमर हो गये। इसी प्रकार तुकारामजी महाराज, ज्ञानेश्वरजी महाराज, संत एकनाथजी, रामसुखदासजी महाराज, साँईं टेऊँरामजी, साँईं लीलाशाहजी महाराज (और संत आशारामजी बापू) आदि सभी संतों के प्रति निंदकों ने अपने लक्षण दिखाये व सज्जनों ने अपनी सज्जनता से फायदा उठाया। वे सौभाग्यशाली सज्जन यहाँ भी सुख-शांति व परमात्म-ध्यान की प्राप्ति में सफल हुए व परलोक में भी सफल हुए और होते रहेंगे।

शिवजी कहते हैं : **धन्या माता...**

धन्य हैं वे शिष्य, जो अलख पुरुष की आरसी स्वरूप ब्रह्मवेत्ता संतों को श्रद्धा-भक्ति से देखते हैं और उनसे आखिरी दम तक निभा पाते हैं। जो निंदा या कुप्रचार के शिकार बनकर अपनी शांति का घात नहीं करते वे बड़भागी हैं।

पुण्यदायी तिथियाँ

- **१३ फरवरी :** गुरुपुष्यामृत योग (सूर्योदय से रात्रि १०-२३ तक), विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-५३ तक)
- **१४ फरवरी :** मातृ-पितृ पूजन दिवस
- **१८ फरवरी :** मंगलवारी चतुर्थी (सुबह १०-२५ से १९ फरवरी सूर्योदय तक)
- **२७ फरवरी :** महाशिवरात्रि व्रत, रात्रि-जागरण, शिव-पूजन (निशीथकाल : रात्रि १२-२७ से १-१६ तक), (प्रहर :- प्रथम : शाम ६-४२ से, द्वितीय : रात्रि ९-४७ से, तृतीय : मध्यरात्रि १२-५१ से, चतुर्थ : २८ फरवरी प्रातः ३-५६ से)
- **१ मार्च :** द्वापर युगादि तिथि
- **४ मार्च :** मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से ५ मार्च प्रातः ४-५० तक)

वे धनभागी हैं जो ईश्वरप्राप्ति का उद्देश्य बनाकर आजीवन डटे रहते हैं। उन जैसे कोई बड़भागी नहीं जो सद्गुरु का दैवी कार्य करने में तत्पर हो जाते हैं। उनके दैवी कार्य में जो लग जाते हैं, ऐसे लोग सत्यस्वरुप को पाने के अधिकारी बन जाते हैं।

-पूज्य बापूजी

संजीवनी गोली

बच्चों के विकास के लिए विशेष लाभदायी

लाभ : यह गोली व्यक्ति को शक्तिशाली, ओजस्वी, तेजस्वी व मेधावी बनाती है। इसमें सभी रोगों को नष्ट करने की प्रचंड क्षमता है। यह श्रेष्ठ रसायन द्रव्यों से सम्पन्न होने से सप्तधातु व पंचज्ञानेन्द्रियों को दृढ़ बनाकर वृद्धावस्था को दूर रखती है। हृदय, मस्तिष्क व पाचन-संस्थान को विशेष बल प्रदान करती है। इसमें तुलसी-बीज होने से सभी उम्रवालों के लिए यह बहुत लाभदायी है।

सेवन-विधि : छः माह से दो साल उम्र - आधी गोली, दो से आठ साल - एक गोली, आठ-दस साल से ऊपरवाले - दो गोली खाली पेट चूसकर लें।

सावधानी : सेवन के बाद डेढ़-दो घंटे तक दूध न लें।

विशेष : सर्दियों में बच्चों और उनके माता-पिता के लिए 'संजीवनी गोली' वरदान है।

संत च्यवनप्राश

वीर्यवान आँवले, प्रवालपिष्टी, शुद्ध देशी घी और अन्य कुल मिलाकर ५६ द्रव्यों के अलावा हिमालय से लायी गयी वज्रबला डालकर बनाया गया च्यवनप्राश उत्तम आयुर्वेदिक औषधि, पौष्टिक खाद्य तथा एक दिव्य रसायन है।

लाभ : बालक, वृद्ध, स्त्री-संभोग से क्षीण तथा हृदयरोगियों के लिए विशेष लाभकारी। स्मरणशक्ति व बुद्धिवर्धक तथा कांति, वर्ण और प्रसन्नता देनेवाला। खाँसी, श्वास, वातरक्त, वात व पित्तरोग, शुक्रदोष, मूत्ररोग आदि दूर करनेवाला। बुढ़ापा देरी से लानेवाला तथा टी.बी. व हृदयरोगनाशक तथा भूख बढ़ानेवाला है।

सेवन विधि : १ से २ चम्मच दूध या नाश्ते से पूर्व लें।

केसरयुक्त स्पेशल च्यवनप्राश भी उपलब्ध है।

पुष्टि टेबलेट

श्रेष्ठ रसायन औषधियों से युक्त यह टेबलेट शरीर को हृष्ट-पुष्ट और शक्तिशाली बनाती है। खासकर सर्दियों में कृशकाय एवं दुर्बल व्यक्तियों को इसका सेवन लाभदायी है।

सेवन विधि : ४-४ गोली सुबह-शाम पानी, दूध अथवा च्यवनप्राश से लें।

विशेष : इसके सेवन के बाद खुलकर भूख लगने पर पौष्टिक आहार लें। इन दिनों भोजन में घी, दूध, मक्खन, केला, खजूर, सूखा मेवा आदि पौष्टिक पदार्थों का सेवन करें।

(उपरोक्त सामग्रियाँ सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध हैं और डाक द्वारा भी प्राप्त की जा सकती हैं।)

स्वास्थ्यवर्धक विशेष प्रयोग

यौवनदाता : १०-१५ ग्राम गाय के घी के साथ २५ ग्राम आँवले का चूर्ण, ५ ग्राम शहद तथा १० ग्राम तिल का तेल मिलाकर प्रातः सेवन करने से दीर्घकाल तक युवावस्था बनी रहती है।

यादशक्ति बढ़ाने हेतु : प्रतिदिन १५ से २० मि.ली. तुलसी रस व एक चम्मच च्यवनप्राश का थोड़ा-सा घोल बना के सारस्वत्य मंत्र अथवा गुरुमंत्र जपकर पियें। ४० दिन में चमत्कारिक फायदा होगा।

वीर्यवर्धक योग : ४-५ खजूर रात को पानी में भिगो के रखें। सुबह १ चम्मच मक्खन, १ इलायची व थोड़ा-सा जायफल पानी में घिसकर उसमें मिला के खाली पेट लें। यह वीर्यवर्धक प्रयोग है।

माँ-बाप को भूलना नहीं

इस रंगीन, आकर्षक पुस्तक में आप जानेंगे

- कैसे मनायें मातृ-पितृ पूजन दिवस ?
- कैसे करें टीनेज टाइम बम को निष्क्रिय ?
- कैसे पायें स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन ?

₹4

❊ १०० पुस्तक लेने पर प्रति पुस्तक पर ५० पैसे की छूट ❊ कम-से-कम १००० पुस्तकों का सौजन्य कराने पर आपका नाम, फर्म का नाम, विज्ञापन आदि पुस्तक पर छापा जायेगा। ❊ अपने परिचितों, मित्रों आदि से सौजन्य करवाकर अधिक-से-अधिक लोगों को इस पुस्तक से लाभान्वित करें।

स्टीकर, पोस्टर और बैनर भी उपलब्ध हैं। सम्पर्क : अहमदाबाद मुख्यालय - (०७९) ३९८७७७४९/५०/५१

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

पूज्य बापूजी एवं श्री नारायण साँईं की रिहाई हेतु हो रहे वैदिक हवन-यज्ञों की थोड़ी झलकियाँ

१०८ त्रिकुंडी महायज्ञ, अहमदाबाद आश्रम

जोधपुर (राज.)

सातारा (महा.)

लुधियाना (पंजाब)

जमशेदपुर (झारखंड)

दिल्ली

मलकाजगिरि, जि. रंगारेड्डी (आं.प्र.)

रायबरेली (उ.प्र.)

सिकंदराबाद (आं.प्र.)

चांदवड, जि. नासिक

दगडवाडी, जि. बीड (महा.)

पूज्य बापूजी पर हुए षड्यंत्र की सच्चाई समाज को बताने हेतु जगह-जगह साधकों द्वारा किये जा रहे हैं सुप्रचार अभियान

रायपुर (छ.ग.)

जंतर-मंतर, दिल्ली में नुक्कड़ नाटक

मुंबई में नुक्कड़ नाटक